Amire Ahle Sunnat Se Jhoot Ke Bare Me 24 Suwal Jawab (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 350
Weekly Booklet : 350

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دامت برکاتھم العالیہ के मल्फ़ूज़ात का तह़रीरी गुलदस्ता

अमीरे अहले सुन्नत से झूट के बारे में 24 सुवाल जवाब

सफ़ह़ात 20

मुआ़शरे से झूट की बुराई कैसे ख़त्म हो ? 02

क्या झूट बोलने से वुज़ू टूट जाता है ? 07

क्या सुल्ह़ करवाने के लिये झूट बोल सकते हैं ? 10

झूट और चुग़ली से बचने का त़रीक़ा क्या है ? 16

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتھم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अ़र्ज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دار الفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **अमीरे अहले सुन्नत से झूट के बारे में 24 सुवाल जवाब**

सिने त़बाअ़त : शव्वालुल मुकर्रम **1445** हि., एप्रिल **2024** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला "**अमीरे अहले सुन्नत से झूट के बारे में 24 सुवाल जवाब**" शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी دامت برکاتھم العالیہ ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए Whatsapp, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکرج ۵۱ص۱۳۸دارالفکربیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

अमीरे अहले सुन्नत से झूट के बारे में 24 सुवाल जवाब

दुआए ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 18 सफ़ह़ात का रिसाला : **"अमीरे अहले सुन्नत से झूट के बारे में 24 सुवाल जवाब"** पढ़ या सुन ले उसे हमेशा सच बोलने और झूट से बचने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और उसे बे ह़िसाब बख़्श दे। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते शैख़ अबू बक्र शिब्ली رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ एक रोज़ बग़दादे मुअ़ल्ला के जय्यिद आ़लिम ह़ज़रते अबू बक्र बिन मुजाहिद رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के पास तशरीफ़ लाए, उन्हों ने फ़ौरन खड़े हो कर उन को गले लगा लिया और पेशानी चूम कर बड़ी ता'ज़ीम के साथ अपने पास बिठाया। ह़ाज़िरीन ने अ़र्ज़ किया : या सय्यिदी ! आप और अहले बग़दाद आज तक इन्हें दीवाना कहते रहे हैं मगर आज इन की इस क़दर ता'ज़ीम क्यूं ? जवाब दिया : मैं ने यूंही ऐसा नहीं किया, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! आज रात मैं ने ख़्वाब में येह ईमान अफ़रोज़ मन्ज़र देखा कि ह़ज़रते अबू बक्र शिब्ली बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए तो सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने खड़े हो कर इन को सीने से लगा लिया और पेशानी को बोसा दे कर अपने पहलू में बिठा लिया। मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **!** शिब्ली पर इस क़दर शफ़्क़त की वज्ह ? **अल्लाह** पाक के मह़बूब صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (ग़ैब की

ख़बर देते हुए) फ़रमाया कि येह हर नमाज़ के बा'द येह आयत पढ़ता है :

﴿لَقَدۡ جَآءَكُمۡ رَسُوۡلٌ مِّنۡ اَنۡفُسِكُمۡ عَزِيۡزٌ عَلَيۡهِ مَا عَنِتُّمۡ حَرِيۡصٌ عَلَيۡكُمۡ بِالۡمُؤۡمِنِيۡنَ رَءُوۡفٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۱۲۸﴾﴾

(پ11، التوبہ:128) और इस के बा'द मुझ पर दुरूद पढ़ता है। (القول البدیع، ص346)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

सुवाल : किसी के अचानक इन्तिक़ाल पर उस के क़रीबी रिश्तेदार को बुलाने के लिये कहा जाता है कि "बहुत बीमार है, आप जल्दी घर आ जाएं" ह़ालां कि जिस को बीमार बताया जा रहा होता है उस का इन्तिक़ाल हो चुका होता है, येह इस लिये बोला जाता है ताकि क़रीबी अ़ज़ीज़ को तक्लीफ़ न हो, ऐसा करना कैसा ?

जवाब : येह झूट है लिहाज़ा इस त़रह़ कहने से एह़तियात़ करनी चाहिये। इस की जगह यूं कह दिया जाए कि एमरजन्सी है, जल्दी आ जाएं। अब एमरजन्सी में सख़्त बीमारी भी आ जाएगी और फ़ौतगी भी शामिल होगी। येह एक मोह़तात़ जुम्ला है मगर लोग समझते नहीं और ख़्वाह म ख़्वाह गुनाहों भरे उलटे सीधे जुम्ले बोल देते हैं ह़ालां कि उन का Alternate (या'नी मुतबादिल) मौजूद होता है लेकिन इस की त़रफ़ तवज्जोह ही नहीं करते। **अल्लाह** पाक से डरना चाहिये। आज किसी और की मौत की ख़बर दे रहे हैं, कल हमारी मौत की ख़बर भी आ़म हो जाएगी, मरना तो सब ने है, किसी को मौत से फ़रार नहीं है लिहाज़ा हमेशा सच बोलना चाहिये। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/244)

सुवाल : आज कल हम येह देखते हैं कि लोग बात बात पर झूट बोल रहे होते हैं और मुआ़शरे में झूट को बहुत मा'मूली समझा जाने लगा है बल्कि बा'ज़ लोग झूट बोलने को अच्छा समझते हैं तो इस ह़वाले से आप कुछ राहनुमाई फ़रमा दीजिये ताकि हमारे मुआ़शरे में झूट की बुराई ख़त्म हो जाए।

जवाब : वाक़ेई मुआ़शरे में झूट बहुत ज़ियादा आ़म है और बात बात पर झूट बोला जाता है, मसलन लोग तिजारत में झूट बोलते हैं, मुलाज़मत में झूट बोलते हैं, मुलाज़िम रखना है तो झूट बोलते हैं, अगर किसी ने मुलाज़िम रहना है तो वोह झूट बोलेगा, ख़रीदारी करनी है तो झूट बोलेंगे और मज़ाक़ में भी झूट बोलेंगे तो यूं क़दम क़दम पर झूट बोला जा रहा है। बा'ज़ झूट ऐसे होते हैं जिन का ख़ुद को पता चल जाता है कि मैं झूट बोल रहा हूं और बा'ज़ अवक़ात बिल्कुल तवज्जोह नहीं होती और बन्दा झूट बोल रहा होता है ❀ जैसे किसी की त़बीअ़त बहुत ख़राब है तो अब अगर उस से पूछेंगे कि क्या ह़ाल है ? त़बीअ़त कैसी है ? तो वोह बोलेगा : ठीक हूं। अब अगर उस की तवज्जोह अपने मरज़ की त़रफ़ भी है कि मैं ठीक नहीं हूं, बीमार पड़ा हूं और बुख़ार में तप रहा हूं और फिर भी वोह "ठीक हूं" कह रहा है तो येह झूट है। यहां तक कि अगर उस ने इस ज़ेह्न से اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! कहा कि मैं ठीक हूं जैसा कि लोग "ठीक हूं" के मा'ना में भी اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! कहते हैं तो अब येह भी झूट है। जब बन्दा बीमार होता है तो लोग पूछते हैं : क्या ह़ाल है ? अब पूछने वाले भी रस्मी पूछ रहे होते हैं वरना अगर मरीज़ ऐसों के सामने अपनी बीमारी की फ़ाइल खोले तो वोह इस के मुतह़म्मिल नहीं होंगे और इसे बरदाश्त नहीं करेंगे। ऐसे मौक़अ़ पर मरीज़ की तवज्जोह **अल्लाह** पाक की ने'मतों की त़रफ़ हो, मसलन मैं मुसल्मान हूं तो अब वोह ह़ाल पूछे जाने पर अपने मुसल्मान होने के तसव्वुर से اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! कहे तो बचत हो जाएगी वरना "ठीक हूं" के मा'ना में اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! कहेगा तो येह झूट क़रार पाएगा। ❀ इसी त़रह़ ताजिर अपने माल की ता'रीफ़ में पता नहीं क्या क्या बोल रहा होता है और बा'ज़ अवक़ात तो

माल बेचने के लिये सरीह़ या'नी खुले झूट बोल रहा होता है, मसलन इतने में तो मुझे वारा नहीं खाता (या'नी बचत नहीं होती), इतने में तो मुझे पड़ा नहीं है और इतने में तो मेरी ख़रीद भी नहीं है, फिर वोह गाहक को "ख़रीद भाव" बल्कि बा'ज़ अवक़ात तो "ख़रीद भाव" (जिस रेट में ख़रीदी) से कम में भी दे देता है ह़ालां कि ख़रीद भाव कुछ और होता है मगर वोह उसे ख़रीद भाव बता कर झूट बोल रहा होता है। ❀ यूंही अगर कोई दुकान पर रेज़गारी (खुले पैसे) लेने आया तो झूट बोलेंगे कि नहीं है ह़ालां कि रेज़गारी का ढेर लगा होता है। इस मुआ़मले में ताजिर येह भी बोल सकते हैं कि हमें ख़ुद इस की ज़रूरत पड़ेगी मगर चूंकि इस त़रह़ कहने से अगला बह़्स करेगा कि मेरे को दे दो, मुझे बहुत ज़रूरत है। तो इस लिये झूट बोल कर टाल देते हैं। याद रहे ! झूट बोलने का अ़ज़ाब बरदाश्त नहीं हो पाएगा लिहाज़ा झूट न बोलें और अगर सामने वाला बह़्स करे तो आप उसे इस त़रह़ समझा सकते हैं कि अगर मैं बोल देता कि रेज़गारी (खुले पैसे) नहीं है तो आप मुझ से न उलझते लेकिन मैं ने झूट से बचने के लिये आप को सच बता दिया कि रेज़गारी है मगर मेरे पास भी गाहक आते हैं और बड़ा नोट देते हैं तो खुले पैसों की मुझे भी ज़रूरत होती है, इस लिये मैं ने रखे हुए हैं तो सच बोलने पर आप मुझ से उलझ रहे हैं। ❀ बहर ह़ाल लोग बात बात पर झूट बोलते हैं जैसा कि कहीं पहुंचने में देर हो गई तो जब पूछा जाएगा कि क्यूं देर हो गई ? तो इस का भी कोई न कोई बहाना तलाश लेंगे कि फ़ुलां मिल गया था या पेट में दर्द हो गया था वग़ैरा ह़ालां कि लेट होने की वज्ह पेट में दर्द होना नहीं था क्यूं कि पेट में दर्द होते हुए क़दम किस त़रह़ चलते रहे ? बल्कि लेट यूं हुए कि घर से निकले ही देर से थे। बा'ज़

अवक़ात लेट होने पर येह भी कह दिया जाता है कि ट्राफ़िक में फंस गया था इस लिये लेट हुवा ह़ालां कि आप जब घर से निकले थे तब ही लेट हो गए थे और ट्राफ़िक में फंस कर मज़ीद लेट हो गए तो यूं आप ट्राफ़िक में फंसने की वज्ह से लेट नहीं हुए बल्कि घर से लेट निकलने की वज्ह से लेट हुए। याद रखिये ! जिस को जल्दी पहुंचना होता है वोह घर से जल्दी निकलता है लेकिन दीनी काम में ख़ास तौर पर बन्दा लेट हो ही जाता है। अगर कोई इज्तिमाअ़ या मदनी मुज़ाकरे में लेट पहुंचता है तो वोह भी ट्राफ़िक में फंसने का बहाना बनाता है तो यूं बा'ज़ अवक़ात नेक कामों में भी बन्दा झूट बोल रहा होता है, **अल्लाह** करीम हमें झूट से बचाए और सच्चे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पैरवी करते हुए हमेशा सच बोलने की सआ़दत बख़्शे। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/60 ता 62)

सुवाल : झूट बोलने के ह़वाले से हमारे मुआ़शरे में बहुत सारी चीज़ें राइज हैं और लोगों में उन का ज़िक्र भी होता है, मसलन "यहां तो झूट बोलने की इजाज़त है" वग़ैरा इस से मा'लूम होता है कि झूट एक बहुत वसीअ़ मौज़ूअ़ है, जिस त़रह़ ग़ीबत के ह़वाले से बहुत सारी वज़ाह़तें बयान की गईं इसी त़रह़ झूट के मुतअ़ल्लिक़ भी भरपूर इ़ल्म होना ज़रूरी है, जैसे आप फ़रमाते हैं कि मैं इस बारे में फ़ैसला नहीं कर पाता कि हमारे यहां झूट ज़ियादा है या ग़ीबत ?

जवाब : ऐसा लगता है कि झूट ज़ियादा है, झूट बोलते हुए पता ही नहीं चलता कि झूट बोल रहे हैं। एक मरतबा हम किसी मरीज़ को देखने गए, वोह मरीज़ आज़्माइश में लग रहा था, हम ने उस से हमदर्दी की तो उस के पास मौजूद उस के अ़ज़ीज़ ने कहा कि इन को कोई मस्अला नहीं है, येह

सहीह हैं। उन का येह जुम्ला झूट था, अगर उन्हें इल्म नहीं था कि कैसी तबीअत है तो अलग बात है लेकिन मा'लूम होने के बा वुजूद कहना कि ठीक है, येह झूट होगा। आज कल मरीज़ के बारे में इस तरह बोल दिया जाता है हालां कि मरीज़ शदीद तक्लीफ़ में होता है तो इस मौक़अ़ पर तबीअ़त ठीक है कहना, झूट होगा।

यूं ही अगर कोई सख़्त बात करने के बा'द कहे कि आप को मेरी बात बुरी तो नहीं लगी ? सामने वाला कहता है : नहीं नहीं, कोई बात बुरी नहीं लगी, हालां कि उस को वोह बात बहुत बुरी लगी होती है, उस की वज्ह से वोह अन्दर ही अन्दर कट चुका होता है लेकिन झूट बोल देता है कि कुछ नहीं हुवा। झूट में काफ़ी बातें आ जाती हैं, बस इन्सान को अपनी ज़बान संभालनी चाहिये, सुवाल करने वाले तो सुवाल करेंगे मगर उन्हें जवाब देने में झूट शामिल नहीं होना चाहिये। इसी तरह कोई परेशान हो और दूसरा उस से पूछे कि क्या बात है, आप परेशान लग रहे हैं ? वोह आगे से इन्कार कर दे कि कोई परेशानी नहीं है तो येह उस ने झूट बोला। परेशानी बता देने में क्या हरज है ? (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/318)

सुवाल : झूट बोलने और बहाना बनाने में क्या फ़र्क़ है ?

जवाब : झूट सच का उलट है जब कि बहाने बा'ज़ अवक़ात दुरुस्त भी होते हैं और बा'ज़ अवक़ात ग़लत़ भी। (अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के क़रीब बैठे हुए मुफ़्ती साहिब ने फ़रमाया :) जो बात वाक़ेअ़ के ख़िलाफ़ होगी उसे झूट बोला जाएगा जब कि बहानों में दोनों बातें हो सकती हैं।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/238)

सुवाल : झूटी ता'रीफ़ करना कैसा ?

जवाब : अगर मस्का लगाने (खुशामद) के लिये किसी की ता'रीफ़ की, कि "आज आप बहुत अच्छे लग रहे हो" तो येह झूट और गुनाह होगा। (الحدیقۃ الندیۃ، 3/174) बहर हाल ! हमें मुसल्मान से हुस्ने ज़न रखना चाहिये कि हम उसे अच्छे लग रहे होंगे जभी वोह ऐसा कह रहा है।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/307)

सुवाल : क्या जिन्नात भी झूट बोलते हैं ?

जवाब : सब से पहले झूट एक जिन्न ने ही बोला था और वोह जिन्न "इब्लीस" है जिसे हम शैतान कहते हैं। शैतान दर अस्ल जिन्न है। (पारह : 15, अल कह्फ़ : 50, मिरआतुल मनाजीह़, 6/661) बा'ज़ लोग इसे फ़रिश्ता कहते हैं जो दुरुस्त नहीं है। इब्लीस का अस्ल नाम "अ़ज़ाज़ील" है।

(تفسیر طبری، پ1، البقرۃ، تحت الآیۃ:34، 1/262، حدیث:686) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 10/52)

सुवाल : क्या झूट बोलने से वुज़ू टूट जाता है ?

जवाब : झूट बोलने से वुज़ू नहीं टूटता लेकिन बेहतर है कि दोबारा वुज़ू कर लिया जाए। (بحر الرائق، 1/34) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/101)

सुवाल : क्या बच्चों को सबक़ आमोज़ झूटी कहानियां बना कर सुना सकते हैं ?

जवाब : ऐसा झूट जिस का सब को पता हो और जो सुने वोह समझ जाए कि येह झूट है, इस में कोई ह़रज नहीं। (احیاء العلوم، 2/419, एह़याउल उ़लूम मुतर्जम, 2/120) जैसे बिल्ली ने बन्दर को यूं कहा वग़ैरा। ज़ाहिर है सुनने वाले समझते हैं कि येह झूट है, फिर बन्दर ने बिल्ली को कहा भी तो समझा किस ने ? लेकिन येह उस वक़्त दुरुस्त है जब कोई ज़रूरत हो वरना फ़ुज़ूल बात है।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/271)

सुवाल : कोई शख़्स अक्सर झूट बोलता हो तो उस की सच्ची बात भी झूट लगती है, क्या इस को बद गुमानी कहा जाएगा ?

जवाब : कसरत से झूट बोलने वाला शख़्स कभी सच्ची बात भी कर देता है, लेकिन येह फ़ित्री चीज़ है कि ऐसे शख़्स की सच्ची बात पर भी यक़ीन नहीं आता। बहर हाल ! इस को बद गुमानी नहीं कहा जाएगा।

(تفسیر قرطبی، پ26، الحجرات، تحت الآیۃ:12، 8/238 ماخوذاً) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/29)

सुवाल : कोई किसी से कहे कि ''लोगों ने आप को सलाम कहा है'' हालां कि हर फ़र्द ने नहीं कहा होता तो क्या येह झूट होगा ?[1]

जवाब : अगर सब ने उसे अपना वकील बनाया है कि ''हमारा सलाम पहुंचा दो'' तो ठीक है, वरना दुरुस्त नहीं। लोग उ़मूमन मुझे कहते हैं कि ''हमारे सब घर वालों या गाउं वालों ने आप को सलाम कहा है'' अगर वाक़ेई सब ने वकील बनाया हो तो ह़रज नहीं, वरना अपनी त़रफ़ से इस त़रह़ नहीं कहना चाहिये। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/202)

सुवाल : बा'ज़ लोगों ने इस जुम्ले को अपना तक्या कलाम (वोह लफ़्ज़ जो गुफ़्तगू में बार बार बोला जाए उसे तक्या कलाम कहते हैं) बना रखा है : ''अगर मैं झूट बोलूं तो मरते वक़्त मुझे कलिमा नसीब न हो'' ऐसा कहना कैसा है ?

जवाब : जुम्ला तो बहुत ख़त़रनाक है और बड़ी जुरअत मन्दी है। ईमान की जैसे कोई अहम्मिय्यत ही नहीं है कि झूट बोलूं तो ईमान पर ख़ातिमा ही न हो। ऐसी बात तो कभी ख़्वाब में भी नहीं बोलनी चाहिये। इस के हुक्म में तफ़्सील है, ऐसा जुम्ला न बोला जाए। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/214)

---

1 ... येह सुवाल ''शो'बए मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत'' का क़ाइम कर्दा है और जवाब अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का इनायत किया हुवा है।

सुवाल : अगर किसी इन्सान ने तीन मरतबा झूटी बात पर कुरआने पाक उठाया तो इस का क्या गुनाह है ?

जवाब : कुरआने करीम की क़सम खाना क़सम है अलबत्ता सिर्फ़ कुरआने करीम उठा कर या उस पर हाथ रख कर कोई बात करना क़सम नहीं "फ़तावा रज़विय्या" जिल्द 13 सफ़ह़ा 574 पर है : झूटी बात पर कुरआने मजीद की क़सम उठाना सख़्त अ़ज़ीम गुनाहे कबीरा है और सच्ची बात पर कुरआने अ़ज़ीम की क़सम खाने में ह़रज नहीं और ज़रूरत हो तो उठा भी सकता है मगर येह क़सम को बहुत सख़्त करता है। किसी ख़ास ज़रूरत के बिग़ैर नहीं उठानी चाहिये। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/494)

सुवाल : मज़ाक़ में झूट बोलना कैसा ?

जवाब : मज़ाक़ में झूट बोलने से मुतअ़ल्लिक़ चन्द रिवायात मुलाह़ज़ा कीजिये : ❀ सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बन्दा पूरा मोमिन नहीं होता जब तक मज़ाक़ में भी झूट को न छोड़ दे और झगड़ा करना न छोड़ दे अगर्चे सच्चा हो। (مسند احمد، 3/268، حدیث:8638) ❀ नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो बात करता है और लोगों को हंसाने के लिये झूट बोलता है उस के लिये हलाकत है, उस के लिये हलाकत है या'नी बरबादी और तबाही है। (ترمذی، 4/141، حدیث:2322) ❀ प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बन्दा बात करता है और मह्ज़ इस लिये करता है कि लोगों को हंसाए लेकिन वोह इस की वज्ह से जहन्नम की इतनी गहराई में गिरता है जो आस्मान और ज़मीन के दरमियानी फ़ासिले से भी ज़ियादा है और ज़बान से जितनी लग़्ज़िश (ग़लती) होती है येह उस लग़्ज़िश से ज़ियादा है जो क़दम से होती है। (كتاب الزهد لابن المبارک، ص255، حدیث:734)

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/289)

सुवाल : किसी को हंसाने के लिये मज़ाक़ में झूट, ग़ीबत या तोहमत का सहारा ले सकते हैं ?

जवाब : जी नहीं ! ऐसा करना गुनाह है। आज कल झूटे चुटकुले (मज़ाक़) बहुत चल रहे हैं, येह सब गुनाह हैं। जैसे कॉमेडियन, लोगों को हंसाते हैं या किताबों और अख़्बारों में वैसे ही बे मक़्सद चुटकुले लिखे होते हैं जिन का मक़्सद सिर्फ़ सामने वाले को हंसाना होता है, येह नहीं होने चाहिएं। रिवायत में है : जो लोगों को हंसाने के लिये झूटी बात करता है तो वोह जहन्नम की गहराई में गिरता है। (کتاب الزہد لابن المبارک، ص 255، حدیث: 734) अलबत्ता बा'ज़ झूटे चुटकुले ऐसे भी होते हैं जिन से मक़्सूद हंसाना नहीं होता बल्कि इब्रत या सबक़ आमोज़ बात समझाना होता है और सुनाने वाले की निय्यत भी येही होती है तो इन में जवाज़ की गुन्जाइश होगी।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/446)

सुवाल : क्या दो दोस्तों के दरमियान सुल्ह़ करवाने के लिये झूट बोल सकते हैं ?

जवाब : लफ़्ज़ صلح के लाम पर पेश नहीं है बल्कि येह साकिन है या'नी सुल्ह़। झूट बोलने की सूरत तो मौजूद है मगर जब तक बिग़ैर झूट बोले सुल्ह़ मुम्किन हो तो झूट न बोला जाए, हर सूरत में झूट बोलने की इजाज़त नहीं है। अगर सब रास्ते बन्द हो गए और सच बोलेंगे तो सुल्ह़ नहीं होगी तो अब झूट की गुन्जाइश निकलेगी लेकिन अब भी अगर तोरिये से काम हो सकता है (तोरिये का मत़लब है लफ़्ज़ का दूसरा कोई दूर का मा'ना मुराद लेना) तो इसी से काम चलाए, सरीह़ (वाज़ेह़) झूट न बोले। (बहारे शरीअ़त, 3/517, 518, हिस्सा : 16 मफ़्हूमन) येह सब एह़तियातें वोही कर सकेगा जिस को इल्म होगा।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/317)

सुवाल : हम लोग आपस में बात करते हुए झूट सच का ख़याल नहीं रखते, ऐसी नसीह़त फ़रमाइये कि झूट से नफ़रत हो जाए और हम कभी झूट न बोलें।

जवाब : झूट वाक़ेई बहुत बुरी चीज़ है। झूट ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। हर मुसल्मान को इस से बचना चाहिये और हमेशा सच बोलना चाहिये। कहते हैं : "सांच को आंच नहीं।" उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا फ़रमाती हैं : रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को झूट से ज़ियादा ना पसन्द कोई चीज़ नहीं थी, जब आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी के झूट पर आगाह होते अगर्चे वोह झूट छोटा सा होता तो उस झूट बोलने वाले को अपने क़ल्बे अत़्हर (या'नी मुबारक दिल) से निकाल देते, यहां तक कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जान लेते कि उस ने तौबा कर ली है। (مستدرک، 5/133، حدیث:7126) सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब बन्दा झूट बोलता है तो उस की बदबू से फ़रिश्ता एक मील दूर हो जाता है। (ترمذی، 3/392، حدیث: 1979) झूट से बचने के लिये झूट बोलने के अ़ज़ाबात और सच बोलने के फ़ज़ाइल की मा'लूमात ह़ासिल कीजिये और इस के लिये "बहारे शरीअ़त" के सोलहवें ह़िस्से में मौजूद "झूट का बयान", नीज़ "एह़याउल उ़लूम" की तीसरी जिल्द का मुत़ालआ़ कीजिये, इन में झूट के मुतअ़ल्लिक़ काफ़ी तफ़्सीलात मौजूद हैं, اِنْ شَآءَاللہ झूट से नफ़रत पैदा होगी। **अल्लाह** करीम हम सब को सच्चे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े सच्चा बना दे। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/305)

सुवाल : हम मार्केट में दुकानदारी करते हैं जहां झूट की बहुत ज़ियादा मुदाख़लत होती है, इस से बचने का कोई त़रीक़ा इर्शाद फ़रमा दीजिये।

जवाब : जब रोज़ा रखते हैं तो भूक और प्यास लगती है मगर फिर भी

रोज़ा रख लेते हैं और तरावीह़ पढ़ने का पुख़्ता अ़ज़्म होता है तो तरावीह़ पढ़ने में भी काम्याब हो जाते हैं तो इसी त़रह़ झूट से बचने का पुख़्ता अ़ज़्म कर लें तो इस से भी बच जाएंगे। झूट बोलना छोड़ दें, चाहे सच बोलने से करोड़ों रुपै का नुक़्सान हो रहा हो या सौदा ख़राब हो रहा हो तो होने दें, क्या पता करोड़ों रुपै का सौदा तै़ होते ही हार्टफ़ेल हो जाए, ज़िन्दगी का कोई भरोसा नहीं है। अगर हार्टफ़ेल न भी हो तो येह करोड़ रुपिया कब तक खा लेंगे ? ऐसा पैसा दवाओं में चला जाता है, डाकूओं के पास और न जाने कहां कहां निकल जाता है। बहर ह़ाल ! झूट में बरकत नहीं बल्कि नहूसत व बरबादी है और झूट बोलना जहन्नम में ले जाने वाला काम है, इस लिये झूट को अपनी डिक्शनरी से निकाल दीजिये। याद रखिये ! सच बोलने वाला हमेशा काम्याब होता है, एक मुह़ावरा है : "सांच को आंच नहीं" या'नी सच को कोई ज़रर नहीं पहुंच सकता। गाहक जाता है तो चला जाए कोई बात नहीं, सच बोलते रहने से आहिस्ता आहिस्ता इमेज क़ाइम हो जाएगा, ह़त्ता कि एक वक़्त ऐसा आएगा कि लोग बोलेंगे कि यार येह दुकानदार सच्चा है और ख़ुद ब ख़ुद आप की दुकान पर गाहक बढ़ना शुरूअ़ हो जाएंगे, फिर आप जो बोलेंगे, गाहक आंख बन्द कर के मान लेंगे। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि सच बोलने वाला और अमानत दार ताजिर अम्बिया, सिद्दीक़ीन और शुहदा के साथ होगा।

(ابن ماجہ،3/6،حدیث:2139, मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/298)

सुवाल : मेरा फ़र्नीचर का काम है, बा'ज़ दुकानदार ऐसा करते हैं कि हलके माल को भारी और भारी माल को हलका कह कर बेच देते हैं, ऐसा करना कैसा ?

जवाब : बा'ज़ चीजें वज़्न दार हों तो उन की अच्छी क़ीमत लगती है, जब कि बा'ज़ चीजें अगर हलकी हों तो तब उन की क़ीमत अच्छी लगाई जाती है। अगर कोई शख़्स किसी चीज़ को हलका या भारी कह कर बेच रहा है और गाहक को मा'लूम है कि किस चीज़ में हलका या भारी कह रहा है, नीज़ कोई धोके की सूरत नहीं है और दुकानदार झूट भी नहीं बोल रहा तो ऐसा करना सहीह है। अलबत्ता अगर वोह हलकी चीज़ को भारी या भारी चीज़ को हलकी कह रहा है या घटिया Quality (या'नी मे'यार) की चीज़ को अच्छी Quality कह कर बेच रहा है और झूट व धोका देही से काम ले रहा है तो ऐसा करना जाइज़ नहीं है, (درمختار، 229/7) क्यूं कि जब गाहक को मा'लूम होगा कि मुझ से दुकानदार ने झूट बोला है, धोका दिया है या चीज़ के ऐब को छुपाया है तो वोह चीज़ ही नहीं लेगा या अगर लेगा तो दाम कम करेगा। जो दुकानदार झूट या धोका देही से काम लेगा वोह गुनाहगार होगा। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 9/242,243)

सुवाल : आज कल मार्केट में किसी भी क़िस्म के धोके से बचा नहीं जाता यहां तक कि पुराने Spare Parts (या'नी पुर्ज़ों) को नया और लोकल को Genuine Parts (या'नी अस्ल पुर्ज़े) कह कर बेच दिया जाता है, ऐसा करना कैसा है ?

जवाब : अगर पुराने Spare Parts को नया, घटिया को आ'ला और दूसरे मुल्क के Spare Parts को उस मुल्क का कह कर बेचा कि जिस मुल्क का मशहूर होता है तो येह सब धोका और झूट है और ऐसा करना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। अलबत्ता अगर बेचने वाले ने ख़रीदने वाले पर येह बात वाज़ेह कर दी हो कि मेरे पास नया नहीं पुराना

Spare Parts है जिसे लोग नया कर के बेचते हैं और यूं गाहक को Spare Parts की Condition (या'नी हालत) बता दी तो अब ख़रीदो फ़रोख़्त में कोई गुनाह नहीं है। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/505)

सुवाल : बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ عَلَيْهِم की तह़रीर के मुआमले में क्या एह़तियातें थीं ? इस बारे में कुछ इर्शाद फ़रमा दीजिये।

जवाब : हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهِ عَلَيْهِم अल्फ़ाज़ के इस्ति'माल में बहुत मोह़तात़ होते थे चुनान्चे "एह़याउल उ़लूम" की तीसरी जिल्द में है : ह़ज़रते मैमून बिन अबू शबीब رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं बैठा ख़त़ लिख रहा था कि एक ह़र्फ़ पर आ कर रुक गया कि अगर येह लफ़्ज़ लिख देता हूं तो ख़त़ ख़ूब सूरत हो जाएगा लेकिन झूट से दामन नहीं बचा सकूंगा। फिर मैं ने वोह लफ़्ज़ छोड़ने का अ़ज़्म कर लिया कि भले मेरा ख़त़ ख़ूब सूरत न हो मगर मैं येह लफ़्ज़ नहीं लिखूंगा। तो मुझे घर के कोने से निदा की गई जिस में कुरआने करीम की इस आयत की आवाज़ थी :

﴿ يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ﴾ (پ 13، ابراہیم:27)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : "**अल्लाह** साबित रखता है ईमान वालों को ह़क़ बात पर दुन्या की ज़िन्दगी में और आख़िरत में।" (احیاء العلوم، 3/169) येह तो हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهِ عَلَيْهِم की तह़रीर में एह़तियातें थीं लेकिन आज कल के मज़ामीन और आर्टीकल में इतना झूट होता है कि ज़मीनो आस्मान के कुलाबे मिला दिये जाते हैं (या'नी झूटी सच्ची बातें लिख दी जाती हैं)। ऐसा झूट लिखने से बेहतर है क़लम रख दें।

गुज़श्ता ज़माने में मो'तज़िला नामी एक बद मज़हब फ़िर्क़ा गुज़रा है, उन का जाहि़ज़ नामी एक बहुत बड़ा आ़लिम था, जब वोह मर गया तो

किसी ने उसे ख़्वाब में देख कर पूछा कि तेरे साथ क्या गुज़री ? तो उस ने कहा कि अपने क़लम से वोही लिखो जिस को देख कर तुम ख़ुश हो जाओ। (266/5،احیاء العلوم, एह़याउल उ़लूम (मुतर्जम), 5/662) फ़ी ज़माना क़लम से क्या क्या लिख रहे होते हैं कुछ होश ही नहीं होता, नीज़ इस वाक़िए़ से सोशल मीडिया और तह़रीरी मेसेज फैलाने वाले इ़ब्रत ह़ासिल करें कि अपनी ज़बान से वोही कहें जो आख़िरत में छुड़ा सके, एक एक ह़र्फ़ संभल संभल कर लिखें और बोलें लेकिन यहां तो इतना मुबालग़ा कर रहे होते हैं कि बस।

ह़म्द, ना'त और मन्क़बत लिखने में एह़तियातें

ना'त शरीफ़, नज़्म या अश्आ़र लिखने में मज़ीद एह़तियात़ की ह़ाजत है कि आदमी इस में फंस जाता है क्यूं कि उस को रदीफ़ या क़ाफ़िया निभाना होता है और अपने मिस्रअ़ का वज़्न बराबर रखने के लिये अल्फ़ाज़ ढूंडना पड़ते हैं जिस की वज्ह से सख़्त आज़्माइश होती है लिहाज़ा सलामती इसी में है कि ह़म्द और ना'त वग़ैरा लिखने की कोशिश न की जाए। इस मैदान में बड़े बड़े शुअ़रा जिन में ना'त गो (ना'त ख़्वान) शाइ़र भी शामिल हैं उन्हों ने ठोकरें खाई हैं और ऐसी ऐसी शरई ग़लति़यां छोड़ कर दुन्या से रुख़्सत हुए हैं कि اَلْاَمَان وَالْحَفِیْظ । लिखने वालों ने उन की मिसालें तक लिखी हैं कि फ़ुलां इतना बड़ा शाइ़र था, इतने इतने कलाम लिखे, ना'तें भी कहीं मगर येह येह ग़लत़ बात लिख गया। याद रखिये ! ना'त शरीफ़ लिखने के लिये ज़रूरी है कि लिखने वाला मुतसल्लिब (पुख़्ता) आ़लिम हो और इस के साथ साथ फ़न्ने शाइ़री भी जानता हो, अगर ऐसा नहीं है तो कलाम न लिखे। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 3/32)

सुवाल : आप ने एक मदनी मुज़ाकरे में फ़रमाया था कि मैं रोड पार कर के ग्राउन्ड में खेलने नहीं जाता था क्यूं कि मेरी वालिदा ने मन्अ़ किया था,

कुछ दिन पहले आप के एक दोस्त से मेरी मुलाक़ात हुई तो उन्हों ने एक वाक़िआ़ बताया कि हम एक गली में खेला करते थे तो मैं ने इल्यास क़ादिरी से कहा कि "चलो इल्यास ! ग्राउन्ड में खेलते हैं।" आप ने फ़रमाया : "मेरी मां ने मन्अ़ किया है।" उन्हों ने कहा : मां तो घर में है, उन को क्या पता ? तो आप ने फ़रमाया कि "नहीं ! झूट नहीं बोलना।" प्यारे मुर्शिदे करीम ! मेरी आप से दरख़्वास्त है कि येह वाक़िआ़ बच्चों को बताएं ताकि वोह जहां भी जाएं, वालिदैन को बता कर जाएं और झूट न बोलें।

जवाब : ग्राउन्ड और हमारे घर के दरमियान एक बड़ा रोड वाक़ेअ़ था, और उस रोड पर गाड़ियां बहुत रफ़्तार से चलती थीं इस लिये मेरी वालिदा मुझे उस ग्राउन्ड में खेलने के लिये जाने से मन्अ़ करती थीं ताकि मुझे किसी क़िस्म की कोई तक्लीफ़ न पहुंचे। यक़ीनन येह उन की मुझ से महब्बत थी। नीज़ मैं अपनी मां से झूट नहीं बोल सकता था क्यूं कि اَلْحَمْدُلِلّٰہ ! मुझे बचपन से ही **अल्लाह** पाक से डर लगता था। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/67)

सुवाल : झूट और चुग़ली से बचने का त़रीक़ा क्या है ?

जवाब : इन्सान झूट और चुग़ली से उस वक़्त बच सकेगा जब उसे झूट और चुग़ली की तबाह कारियों का इ़ल्म होगा और येह इ़ल्म दीनी कुतुब का मुत़ालआ़ करने से ह़ासिल होगा। झूट से बचने की कोशिश जारी रखे और इस के साथ साथ **अल्लाह** पाक से दुआ़ भी करता रहे, **अल्लाह** पाक की रह़मत से उम्मीद है कि झूट और चुग़ली से छुटकारा नसीब हो जाएगा। अगर कोई शख़्स येह कहता है कि मैं आहिस्ता आहिस्ता इन्हें छोड़ दूंगा तो येह ख़याल ज़ेह्न से निकाल कर फ़ौरन इन गुनाहों को छोड़ दे कि मौत का कुछ मा'लूम नहीं कि किस वक़्त आ जाए लिहाज़ा इन्सान को अपने गुनाहों से जल्द तौबा कर लेनी चाहिये। हां ! अगर कोई ज़ियादा चाय पीता है और

उस के लिये चाय नुक़्सान देह भी है वोह कहे कि मैं आहिस्ता आहिस्ता चाय छोड़ दूंगा तो येह बात समझ में भी आती है, जब कि गुनाहों के मुआ़मले में आहिस्ता का मुआ़मला तर्क कर देना चाहिये। इसी त़रह़ अगर कोई शराब पीता है उसे भी चाहिये कि फ़ौरन छोड़ दे कि इस का पीना ह़राम व गुनाह है। किसी गुनाह को आहिस्ता आहिस्ता छोड़ने की इजाज़त कोई भी आ़लिमे दीन नहीं देगा। मज़ीद मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये मक्तबतुल मदीना की किताब "ग़ीबत की तबाह कारियां" ख़रीद कर मुत़ालआ़ कीजिये। इस किताब को पढ़ने से اِنْ شَآءَاللّٰہ इ़ल्म में इज़ाफ़ा होगा। याद रखिये ! इ़ल्म एक नूर है और गुनाह अंधेरा है, जहां इ़ल्म का नूर आ जाता है तो वहां गुनाहों का अंधेरा बाक़ी नहीं रहता। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/279,280)

सुवाल : झूट की तबाह कारियां किताब कब तक आएगी ?

जवाब : ज़िन्दगी ने साथ दिया तो झूट की तबाह कारियां किताब लिखने का भी इरादा है क्यूं कि मैं इस की ज़रूरत बहुत मह़सूस करता हूं। पहले ख़याल था कि ग़ीबत ज़ियादा है मगर अब समझता हूं कि झूट ग़ीबत से भी ज़ियादा है। बात बात पर झूट बोलना आ़म हो गया है। ज़िम्मेदारान और मुबल्लिग़ीन की बात की जाए या अ़वाम व ख़वास की, पता भी नहीं चलता और मुंह से झूट निकल रहा होता है, अब मेरे जैसा जो ह़ुस्सास (Sensitive) आदमी होता है वोह बा'ज़ अवक़ात जान लेता है कि इस ग़रीब को पता भी नहीं कि येह झूट है लेकिन बहुत मरतबा बोलने की हिम्मत नहीं होती। किताब में मिसालें दे कर समझाने का ज़ेह्न है। कभी याद आता है तो कई मिसालें अपने पास लिख लेता हूं ताकि **अल्लाह** पाक की तौफ़ीक़ से जब किताब आएगी तो اِنْ شَآءَاللّٰہ उस में डाल देंगे। बस **अल्लाह** पाक क़बूल करे और इख़्लास भी अ़त़ा फ़रमाए। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/107)

सुवाल : क्या झूटे शख़्स की कोई निशानी है ? ताकि उस से बचा जा सके।

जवाब : निशानी तो बा'ज़ अवक़ात ग़ैर मुस्लिम की भी पता नहीं चलती। "एक मरतबा मैं किसी मुल्क में था और हमारी गाड़ी सिग्नल पर रुकी हुई थी, इतने में चाय के होटल से एक नौ जवान भागता हुवा निकला और बड़े पुर तपाक अन्दाज़ से मुझे "اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ" कहा, किसी ने मुझे बताया कि येह ग़ैर मुस्लिम है।" आज कल तो किसी का मुसल्मान होना भी मा'लूम नहीं होता क्यूं कि मुसल्मान भी ग़ैर मुस्लिमों जैसा लिबास पहनते और उन की त़रह़ बाल रखते हैं। मुसल्मानों का तहज़ीबो तमद्दुन भी ग़ैर मुस्लिमों जैसा हो गया है। खु़दा की पनाह ! रही बात झूटे शख़्स की निशानी की, तो जब वोह झूट बोलेगा तभी मा'लूम हो सकेगा कि वोह झूटा है इस के इ़लावा येह बात कैसे मा'लूम हो सकती है ! क्यूं कि येह कोई पहेली तो है नहीं जिसे बूझा जा सके। ह़दीसे पाक में मुनाफ़िक़ की येह निशानियां बयान की गई हैं कि "वोह बात करता है तो झूट बोलता है, वा'दा करता है तो वा'दा ख़िलाफ़ी करता है और उस के पास अमानत रखवाई जाए तो ख़ियानत करता है।" (بخاری،1/25،حدیث:34) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/243)

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक्तबतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

अगले हफ़्ते का रिसाला

Jahannam Kya Hai ? (Hindi)
हफ़्तावार रिसाला : 351
Weekly Booklet : 351
जहन्नम क्या है ?
सफ़्हात 25
दुन्या की महब्बत तमाम गुनाहों की जड़ है 02
घर वालों को अ़ज़ाब से किस त़रह बचाएं ? 07
पेन्सिल की चोरी से फांसी के फन्दे तक 19
मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी